Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 1, April-2018, ISSN 2230-7540

रामकृष्णपरमहंसदिव्यचरितम् में खुदीराम का चरित्र एकविवेचन

संध्या*

शोधकर्त्री, विभाग संस्कृत, गाँव - खातीवास, पोस्ट - नांगल सिरोही, जिला - महेन्द्रगढ़, हरियाणा – 123028

सार – ***साहित्य की रचना करने वाला साहित्यकार किसी भी कृति का निर्माण करते समय केवल कल्पना या तथ्यों का आश्रय नहीं लेता अपितु कहीं न कहीं उस कृति में उसके स्वयं के व्यक्तित्व का भी समावेश होता है| अपने विचारों और भावों को प्रकट करने के लिए वह जिन स्तम्भों का आश्रय लेता है उसे पात्र कहा जाता है| लेखक की कृति में कथानक के पश्चात् प्रमुख तत्त्व पात्र ही होता है|***

----------X----------

संस्कृत काव्य शास्त्र के अनुसार काव्य का भेद करने वाले मुख्यतः तीन तत्त्व होते हैं – **वस्तु नेता रसस्तेषां भेदकः|**[1] नेता शब्द का अर्थ मुख्यतः कथानायक होता है | वस्तुतः रचना में यह शब्द सभी पात्रों को बोधित करता है

एक साहित्यकार कृति का निर्माण करते समय उसमें मानवीय विचार , कल्पना , उद्देश्य , प्रयोजन , भावावेश आदि सूक्ष्म से सूक्ष्मतर भावों को पात्र के माध्यम से चित्रित करता है | अतः पात्र जितने अधिक गतिशील होंगे चरित्र उतना ही आकृष्ट होगा | कवियों ने चरित्र-चित्रण की प्रायः दो पद्धतियाँ अपनाई हैं |

प्रत्यक्ष पद्धति - प्रत्यक्ष पद्धति को विश्लेष्णात्मक पद्धति भी कहते हैं | प्रत्यक्ष पद्धति के अन्तर्गत कवि स्वयं पात्रों के चरित्र का वर्णन करता है | उनके गुण-दोष , रूप-रंग , आचार-विचार आदि को स्वयं ही प्रस्तुत करता है |

परोक्ष पद्धति – इसे अभिनयात्मक पद्धति कहा जाता है | इसके अन्तर्गत कवि पात्रों का चरित्र स्वयं प्रस्तुत न करके दूसरे पात्रों के द्वारा प्रस्तुत करवाता है अथवा पात्रों की स्वयं की क्रिया के द्वारा उनके चरित्र पर प्रकाश डालता है |

इस प्रकार चरित्र-चित्रण काव्य का अनिवार्य तथा आवश्यक तत्त्व है |

काव्य में चरित्र का आदर्शमय प्रतिष्ठापन करने के लिए पात्र के समस्त मनोदैहिक गुणों अन्तः और बाह्य सुन्दरता का समायोजन करना अपेक्षित है | अतः एक काव्यकार पात्र के व्यक्तित्व के सम्पूर्ण आदर्शों को अपने समक्ष रखकर उसकी सृजना करता है |

रामकृष्णपरमहंसदिव्यचरितम् महाकाव्य में प्रयुक्त पात्रों को सुविधा की दृष्टि से दो वर्गों में विभक्त किया गया है–

(क) प्रधान पात्र (मुख्य पात्र)

(ख) अप्रधान पात्र (गौण पात्र)

प्रधान पात्र –

'रामकृष्णपरमहंसदिव्यचरितम्' महाकाव्य में अनेक पात्रों का निबन्धन किया गया है | रामकृष्णपरमहंस उनमें प्रधान अर्थात् मुख्य पात्र है | इनके अतिरिक्त खुदिराम , रामकुमार , माथुर बाबू , गोविन्दराय , केशवचन्द्र , नरेन्द्रनाथ (भावी विवेकानन्द) अप्रधान पात्र अर्थात् गौण पात्रों का वर्णन मिलता है |

अप्रधान – पुरुष – पात्र

खुदीराम –

रामकृष्णपरमहंसदिव्यचरितम् महाकाव्य में अप्रधान पात्रों में खुदीराम को चित्रित किया गया है| ये रामकृष्ण परमहंस के पिता थे तथा दिव्य गुण सम्पन्न थे | पुत्र प्राप्ति से पहले ही गदाधर भगवान विष्णु ने इन्हें दर्शन दिए और इनके घर

[1] दशरूपक , १.१६

www.ignited.in

बाललीला करने की इच्छा प्रकट की | **दिव्यपुरुष –** बंगाल प्रदेश के हुगली नामक मण्डल में कामारपुकुर नाम का एक गाँव है | इसी गाँव में वैराग्य , भक्ति , समता व शुद्धि के साक्षत् अवतार खुदीराम नाम के एक ब्राहमण थे | उनका चरित्र ऐसा था मानो धर्म ही मानव के रूप में अवतरित हुआ हो |

उद्यत प्रभात समये दिवसधिपयो वा

सौरप्रभास्फुरितरूत् प्रथमः शशीव |

देवो हरि सगुण रूप इव स्वभक्तै-

र्लोकैः स आद्रियत नम्रशिरोऽभिवादैः ||[2]

प्रातः काल उदय होते सूर्य के समान एवं सूर्य की प्रभा से कान्ति प्राप्त करने वाले दूज के चन्द्रमा के समान रूप वाले उस खुदीराम को कामारपुकुर के लोग इस प्रकार शिर झुकाकर प्रणाम करते थे जैसे सगुण रूपधारी भगवान को भक्त लोग करते हैं |

रामकृष्णपरमहंसदिव्यचरितम् महाकाव्य ग्रन्थ के प्रथम सर्ग में खुदीराम की चारित्रिक विशेषता को लक्षित करके कहा गया है कि दयारूपीजल से जिसका मन रूपी तालाब भरा हुआ था | उस शरणदाता खुदीराम के पास से कोई निराश नहीं लौटता था जिस प्रकार कल्पवृक्ष के पास से सोचे हुए मनोरथ की प्राप्ति के बिना याचक नहीं लौटता |[3]

पुरुषों के उत्तम गुणों के गौरव को धारण करने वाले नारायण के स्मरण पूजन से पवित्र चित्त वाले, द्वन्द्वादि दोषों का दमन करने वाली दिव्य शक्ति वाले खुदीराम थे|

देवो दिनेश नररूपधरः स्वभक्तं

हे मामितो नय निजालयमस्तशङ्कः |

उद्बुध्य नागपिहितं सन्ददर्शशाल

ग्रामं ध्रुवो व निजपूज्यमनन्तरूपम् ||[4]

रघुपति के प्रिय भक्त खुदीराम ने एक बार स्वप्न में अपने इष्टदेव श्रीराम को देखा | नररूपधर देव ने अपने भक्त को आदेश दिया कि मुझे यहाँ से अपने घर ले चलो | वे उठे और देखा कि शालिग्राम के ऊपर नाग बैठा है | जैसे ध्रुव ने अपने पूज्य नारायण भगवान को देखा था |

वैसे ही एक दिन सीमातीत, जन्म मृत्यु रहित, अचिन्त्य रूप, बुद्धि –मन-इन्द्रियों की सीमा से परे नर देहधारी गदाधर को स्वप्न में देखा | प्रस्थान भेदों में रुचि रखने वाले अपनी भावनाओं के अनुसार जिस बहुनाम रूप का यजन करते हैं, उसी वरेण्य रूपधारी को स्वप्न में देखा और विनम्र भाव से नमस्कार किया | जिसको पवित्रतम ऋषि और देवता नहीं पा सकते, हे विभो ! वह दर्शन मुझे कैसे हो गया ? मैं समझ नहीं पाता कि मेरे में कोई ऐसा गुण है | हे अधोक्षज मुझ विनम्र को यह समझाओ|[5]

अन्यत्र कहा गया है कि हे निष्पाप ! तुम कभी पाप के मार्ग पर नहीं चले | झूठ आदि दोषों से तुम्हारा परिचय नहीं है |

हे स्पृहणीय कीर्ति ! मैं तुम्हारे गुणों ! मैं तुम्हारे गुणों से बन्ध गया हूँ , इसलिए तुम्हारे घर में बाललीला करना चाहता हूँ |[6]

इस प्रकार पं. बालकृष्ण भारद्वाज ने अपने महाकाव्य के प्रथम व द्वितीय सर्ग में खुदीराम की दिव्यता का अत्यधिक वर्णन किया है | इससे सिद्ध होता है कि रामकृष्ण के पिता एक दिव्यपुरुष थे |

पुत्र वत्सलता –

पं. खुदीराम में वात्सल्य भाव भी देखने को मिलता है | खुदीराम ने जब अपनी पत्नी के मुख से अतुलनीय व अचिंतनीय बात सुनी कि शिव मन्दिर से कल्पना शून्य अनोखी ज्योति मेरे मुख में प्रवेश कर गई | तब अपनी सहमी हुई पत्नी को कहा – हे सुमुग्ध हृदये ! भगवान के चित्त की दिव्यात्मिका शक्ति इस प्रकार इस भुवनाण्ड में हमेशा अपनी इच्छा विलास के वश में रहने वाला प्रपञ्च करती है | अपने गर्भ में उसी की कला को प्रविष्ट हुआ जान |[7]

---

[2] रामकृष्णपरमहंस दिव्यचरितम् , १ .१३

[3] कारुण्य तोय परिपूर्ण मनस्तडाका
तस्मान् को विगतस्तृषितश्शरण्यात् |
अर्थार्थी लोक निवहो यथा सुरद्रो-
र्याति प्रकल्पितमनोरथवाप्तिशून्यः || रामकृष्णपरमहंस दिव्यचरितम् , १ .१४

[4] रामकृष्णपरमहंस दिव्यचरितम् ,१ .२५

[5] लभ्यं न यच्छुचितमैर्ऋषिभिः सुरैश्च
जातं विभा कथमिदं तव दर्शनं मे |
जानानि नैव मयि कोऽपि गुणोऽस्ति तादृक्
तन्मामधोक्षज विबोधय ते नतोऽस्मि || रामकृष्णपरमहंस दिव्यचरितम् , १ .३८

[6] निष्पाप पापपथि नासि कदापि यातो
मिथ्यादिदोषनिवहस्य न संस्तुतोऽसि |
बद्धोऽस्मि ते गुणगणैः स्पृहणीयकीर्ते-
रिच्छामि तेन तव सद्मनि बाललीला || रामकृष्णपरमहंस दिव्यचरितम् ,१ .३९

[7] दिव्यात्मिका भगवतश्चिति शक्तिरेव
नित्यं सुमुग्ध हृदये भुवनाण्डकेऽस्मिन् |
स्वेच्छा विलास वशगं कुरुते प्रपञ्चं

पण्डित ने अद्भुत क्लेश से घिन्न प्रियतमा के भय को इस धैर्य रूपी प्रिय वचनों के द्वारा शान्त कर दिया | विरह व्यथित कुमुदिनी को चन्द्रमा की तरह अपने कोमल हस्त से उसे प्रसन्न कर दिया |

धैर्यः प्रियः प्रियतमां कुतुकार्ति घिन्नां

प्रोचे वचो वचनपण्डित एष चारु |

चक्रे प्रसन्नवदनां मृदुहस्त सर्पै-

श्चन्द्रोयथा कुमुदिनीं विरहाधि दूनाम् ||[8]

इसके अतिरिक्त पुत्र उत्पत्ति के बाद दिव्यात्माओं की सुमधुर और अतिविचित्र लीलाएं हमेशा ही घटित होती रही | शिशु जन्म के पूर्वापर को बहुत प्रकार से विचार कर आर्य खुदीराम का मन कोमल हो गया था | वह उसे कठोर वचन नहीं बोलता था और न ही धिक्कारता था गलत कामों से मीठी वाणी द्वारा ही हटाता था |[9]

एकान्त गहन प्रदेश में जाकर अपने चिन्तन में मग्न बालक बालस्वभाव सुलभ और मुनियों द्वारा की गई बहुत प्रकार की विचित्र चेष्टाएँ करता था | उसका पिता उसकी इच्छा में बाधा नहीं डालता था |

गत्वा विविक्तगहने निजचिन्त्यमग्नो

बालोऽकरोद् बहुविधाः सुविचित्र चेष्टाः |

बालस्वभाव सुलभा मुनिवर्तिताश्च

वाञ्छा विघातमकरोज्जनको न तस्य ||[10]

अतः कवि द्वारा इन श्लोकों में आर्य खुदीराम की वत्सलता का वर्णन किया है |

हेयान् न्यवारयदसौ मृदुवाक् प्रयोगैः || रामकृष्णपरमहंस दिव्यचरितम्, २.२२

निष्कर्ष-

इस प्रकार पं ० बालकृष्ण भारद्वाज ने अपने महाकाव्य में खुदीराम की दिव्यता का अत्यधिक वर्णन किया है | इससे सिद्ध होता है कि रामकृष्ण के पिता एक दिव्या पुरुष थे |

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. रामकृष्णपरमहंस दिव्यचरितम्, पं० बालकृष्ण भारद्वाज विरचित

2. दशरूपक, धनञ्जय

Corresponding Author

संध्या*

शोधकर्त्री, विभाग संस्कृत, गाँव - खातीवास, पोस्ट - नांगल सिरोही, जिला - महेन्द्रगढ़, हरियाणा – 123028

lakshya2swami@gmail.com

तस्याः कलां हि निज गर्भ गतां विबोध || रामकृष्णपरमहंस दिव्यचरितम् , १ .४५

[8] रामकृष्णपरमहंस दिव्यचरितम्, १.४४

[9] पूर्वापरं शिशुजनेर्बहुधा विचार्य
जातः सुकोमल मनाः क्षुदिराम आर्यः |
प्रोचे न कर्कशमयममुं न च धिच्चकार

[10] रामकृष्णपरमहंस दिव्यचरितम् ,२ .२